

तत्त्वार्थराजवार्तिक

TATTVAARTHARAAJAVAARTIKA

आ. अकलंक · ८वीं शती · अभिलेख २८/९०

श्री गण्डविमुक्तदेव-१



आ. अकलंक

संक्षिप्त परिचय

भट्ट अकलंकदेव कृत — तत्त्वार्थसूत्र पर वार्तिक-शैली की विस्तृत संस्कृत टीका; प्रत्येक सूत्र पर सम्भावित शंकाओं का तर्क-पुरस्सर समाधान।

दार्शनिक गहराई और सर्वांगीण विवेचन के कारण 'राजवार्तिक' नाम सार्थक है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

तत्त्वार्थराजवार्तिक — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक २८ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. अकलंक; रचना-काल ८वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २९५) के अनुसार इनका समय ११५८–११८२ है तथा गुरु श्री गण्डविमुक्तदेव-१। इसी लेखनी से लघीयस्त्रय, न्यायविनिश्चय, प्रमाणसंग्रह, अष्टशती भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में हरिवंशपुराण परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

लघीयस्त्रय

न्यायविनिश्चय

प्रमाणसंग्रह

अष्टशती

समकालीन ग्रन्थ

हरिवंशपुराण

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗

जैनकोश ↗

Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

← लघीयस्त्रय

न्यायविनिश्चय →

श्रुतधारा · ग्रन्थ २८/१० · स्रोत: १०-ग्रन्थ कालानुक्रमिक सूची (मुमुक्षु)